CHETANA
International Journal of Education

Impact Factor
SJIF=5.689

Peer Reviewed/
Refereed Journal

ISSN-Print-2231-3613
Online-2455-8729

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

Received on 25th Jan. 2021, Revised on 8th Feb. 2021, Accepted 12th Feb. 2021

आलेख

भारतीय नारी जीवन : वर्तमान परिप्रेक्ष्य में

* कल्पना शर्मा
विभाग–हिन्दी
ज्योति विद्यापीठ महिला महाविद्यालय, जयपुर
Email: bhardwajkalpana330@gmail.com, Mo. 9783666659

बीज शब्द – *समाज, नारी, आर्थिक, शक्ति, प्रथा आदि।*

सार संक्षेप

नारी तू नारायणी अर्थात् नारी पाखंडो का संहार करने वाली, खड्गधारिणी काली है। वह शक्तिरूपा दुर्गा हैं। विश्व को सुख–समृद्धि से परिपूर्ण करने वाली लक्ष्मी है और ज्ञान का वितरण करने वाली सरस्वती है। सबको धारण करने के कारण पृथ्वी है। सबकी आश्रयदायनी होने के कारण आकाश है। जीवनदायनी होने के कारण वायु और जल है। भले ही पत्नी पति के अधीन कहलाती है पर सच्चे अर्थो में वह परिवार का शासन चलाने वाली सम्राज्ञी हैं। ऋगवेद में कहा गया है –

सम्राज्ञी श्वसुरे भव, सम्राज्ञी श्वश्रुवॉ भव।,

ननान्दरि सम्राज्ञी भव, सम्राज्ञी अधि देववृषु।।

अर्थात सम्राज्ञी बनो श्वसुर की, तुम बनो सास की साम्राज्ञी, सब ननद और देवरजन की, हो स्नेह राज्य की साम्राज्ञी।

स्वतंत्रता के बाद भी नारी का समाज में अपना कोई स्थान नहीं है फिर भी वह संघर्षरत रहकर पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर, घर–परिवार का बोझ उठाती है। बाहरी कामकाज के साथ परिवार की आर्थिक रूप से मदद करती है। आज नारी शिक्षित होकर स्वतंत्र एवं स्वच्छंद विचारो को स्वीकारती हुई समाज में अपना वजूद बना रही है। जैसा कि अल्का प्रकाश ने कहा है–

''नारी की अधिकार सजगता ने स्त्री की स्थिति, उसकी मान्यताओं और संस्कारों को बहुत प्रभावित किया है। उसकी प्राचीन मान्यताऍ एवं मूल्य बदल चुके है। वह वैयक्तिक स्तर पर हस्तक्षेप मय जिंदगी जीना चाहती है। नारी की स्वातंत्रय चेतना और आधुनिकता बोध ने उसकी सोच को नयी दिशा दी हैं।''

पुरूष प्रधान समाज नारी की स्थिति को स्वीकार कर रहा है। नारी पुरूषों के समकक्ष नयी चेतना का आर्विभाव कर रही है। अमेरिका के एक प्रवास के समय विवेकानंद जी से पूछा गया कि भारत में स्त्री का स्थान क्या है?

स्वामी विवेकानंद जी ने कहा :– ''बाल अवस्था में वह पुत्री, युवावस्था मे गृहीणी और प्रौढ अवस्था मे वह मॉ का स्थान प्राप्त करती है। इन अवस्थाओं में वह अधिकार व सम्मान प्राप्त करती है परन्तु पश्चिमी देशो मे हर अवस्था में वह नारी ही रहती है। हमारे यहॉ शक्ति की पूजा भी देवी रूप मे ही की जाती है और हम श्रद्धा व आदर के प्रतीक स्वरूप वर्ष में दो बार नौ दिनों का व्रत रखकर

पूजा करते है। हमारा यह दायित्व है, कि समाज में महिलाओं का सदा सम्मान किया जाए। इसके लिए विचारों की शुद्धता व त्याग की भावना होनी चाहिए।''

स्त्री का हृदय कोमल होता है वह अपनी भावनाओं को दबाते हुये पारिवारिक अत्याचारों को सहन करती हुई जीवनयापन करती हैं। बीसवीं सदी में होकर भी नारी रिति–रिवाजो में बंधकर पति को परमेश्वर मानकर उनसे जुडी रहती हैं। शिक्षा एवं जागरूकता के अभाव मे वह परिवार, समाज के अत्याचारो को सहती हुई जीवन जीने के लिये विवश हैं। राशि प्रभा जी के शब्दो में–

''प्रथाएँ परम्पराएँ और मान्यताएँ ही है जो नारी के विश्वास मे बाधक बन रही है इनके रहते उनके व्यक्तित्व का विकास होना असंभव हैं।''

समाज के इस दोष को दूर करने के लिए राष्ट्रीय आंदोलन के साथ सामाजिक आंदोलन भी हुये जिसमे राजाराम मोहन राय एवं महर्षि दयानन्द ने समाज की कुप्रथाओं को समाप्त किया साथ ही सरोजनी नायडु एवं विजयलक्ष्मी पंडित जैसी महिलाओं ने नारी समाज का पथ प्रशस्त किया जिसका नारी जाति पर गहरा प्रभाव पडा। सरकार द्वारा भी भारत के संविधान में नारी को पुरुषों के समान अधिकार मिले। इस तरह वैधानिक समानता नारी को पहली बार मिली थी।

हर्ष है कि शिक्षा, विज्ञान तथा राजनीति आदि क्षेत्रों में भी नारी ने अपना परचम लहराया है। नारी कला, किसी भी दृष्टि से पुरुष से कम नहीं है। भारतीय नारी ने यह सिद्ध कर दिखाया कि वह संसार की किसी भी जाति अथवा देश की नारी से विद्या, बुद्धि, कौशल, सौन्दर्य और वीरता में कम नहीं है। देश में कन्या भ्रुण हत्या में कमी हो रही है। महिला आरक्षण बिल तथा सशक्तीकरण बिल ने महिलाओं में जागरूकता एवं शक्ति सम्पन्नता पैदा की है एवं इनकी सुरक्षा एवं हित रक्षा के लिए संविधान में लगभग 34 एक्ट प्रभावी हैं।

आधुनिक युग में नारी समाज तेजी से प्रगति की ओर अग्रसर हो रहा है उन्हे बाहरी दुनिया को और करीब से जानने का मौका मिला है। वे उच्च शिक्षित हैं, डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक व अंतरिक्ष यात्री बनकर उच्चतम पदों पर आसीन हैं। जैसे भारत की पहली वितमंत्री निर्मला सीतारमण, कारगिल युद्ध के दौरान भारत की ओर से एक मात्र महिला पायलेट गुंजन सक्सेना, निरजा जैसी एयर हॉस्टेस जिसने अपनी जान देकर कई यात्रियो व बच्चो को आतंकवादियो से बचाया इन सभी ने हमारा मस्तक गौरव से ऊँचा किया है।

आज भी हमारा समाज पुरुष प्रधान हैं. लेकिन लोगो की सोच में परिवर्तन आया है जिसकी वजह से महिलाऐं हर क्षेत्र में कार्य करने में सक्षम हैं. पहले महिलाओं को केवल चार दिवारी के अंदर बंद रख जाता था. जिससे उनके अंदर की प्रतिभा, गुण किसी के सामने नहीं आ पाते थे और उनकी इच्छाएं, दुनिया व समाज को करीब से देखने और अनुभवी जीवन जीने की आकांक्षाएँ दबी रह जाती थी. परन्तु वक्त के साथ ग्रामीण क्षेत्रों में भी बदलाव की बयार पहुंचने लगी है। मनोरंजन व संचार के साधन जैसे टीवी व मोबाइल गांवों में भी पहुंचने लगे हैं। आज गॉव की नारी को अपने वस्त्रों व जीवनशैली के साथ अपने जीवनसाथी का चुनाव करने का अधिकार हैं। गांवों की नारी अपने ससुराल आने से इसलिए मना कर रही है कि वहां शौचालय नहीं है। यह बड़ा बदलाव है और यह बयार और तेज होनी चाहिए। अतः कहा जा सकता है कि नारी की स्थिति में बहुत अधिक सुधार हुआ है

एक बात और, समाज की जो भी रूढ़ियां, नियम या परंपराएं होती हैं, वे सारी की सारी गलत नहीं होती हैं। अर्थात् जो भी बदलाव हों, वे तर्कसंगत होने चाहिए और उसमें दूसरों के हितों का अतिक्रमण नहीं होना चाहिए। नारी को समय, स्थान, अपने परिवार, अपनी परिस्थिति और क्षमता के अनुसार ही उपयुक्त बदलाव को अपनाना होगा और वह भी क्रमिक तरीके से ताकि अनावश्यक टकराव को टाला जा सके।

नारी ने साबित कर दिया है कि जीवन की दौड़ में वह पुरुषों के समकक्ष ही नहीं, बल्कि उनसे बेहतर है। वही जीवन की असली कलाकार है और पुरुष उसके हाथों का मात्र रंग और कागज है। यह दुनिया पल–पल बदलती रहती है और नारियों को भी स्वयं को मौजूदा परिस्थितियों के अनुसार लगातार बदलते रहना होगा। यह तय है कि नारी कोई वस्तु या दया की पात्र नहीं है। सभी

को पता है कि मां के रूप में एक कमजोर दिखने वाली नारी को भी जब लगता है कि उसके बच्चों पर कोई खतरा है तो उनकी रक्षा करने के लिए वह रणचंडी का रूप धारण करने में कोई देर नहीं लगाती है।

युग–युग से नर की दासी बन, जिसने सही यातना भारी।

शूर सपूतों की हो जननी, महापीड़िता भारत नारी॥

रही सदा अनुरूप नरों के, किन्तु उपेक्षित दास अभी है।

बढ़ेगा, जब नारी सम्मान भारत का कल्याण तभी है।

बिना नारी के विकास के यह समाज अधूरा है । जैसे पत्नी–पति की अर्धागिनी है, ठीक इसी प्रकार नारी समाज का अर्द्धांग है। आधे अंग के अस्वस्थ तथा अविकसित रहने पर पूरा अंग ही रोगी और अविकसित रहता है। यदि मनुष्य शिव है तो नारी शक्ति है, यदि पुरुष विश्वासी है तो नारी श्रद्धामयी है, यदि पुरुष पौरुषमय है तो नारी लक्ष्मी है– किसी भी दृष्टि से वह पुरुष से कम नहीं है। वह पुत्री के रूप में पोषणीय, पत्नी के रूप में अभिरमणीय तथा माता के रूप में पूजनीय है। उसमें संसार की अपूर्व शक्ति निहित है। प्रसन्न होने पर वह कमल के समान कोमल और क्रुद्ध होने पर साक्षात चण्डी भी है।

वास्तव में नारी अनेक शक्तियों से युक्त अनेकरूपा है, उसके कल्याण एवं विकास की कामना करना प्रत्येक भारतीय का पवित्र कर्तव्य है। अर्थात्

"सरस्वती दुर्गा कमला ये, नारी के ही रूप हैं।

रत्न–प्रसविनी जग में नारी, इसके रूप अनूप।।

संदर्भ सूची

1. ऋगवेद

2. चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में युग चिन्तन, डॉ अर्चना मिश्र

3. चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य का अनुशीलन, डॉ गोरक्ष थोरात

4. चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में नारी – राजेन्द्र बाविष्कर

5. प्राचीन भारतीय साहित्य मे नारी – डॉ गजानन शर्मा

6. प्रथम दशक के महिला लेखन नारी विमर्श – डॉ. मृदुला वर्मा

7. हिन्दी के सामाजिक उपन्यासों में – डॉ. रेवा कनलकर्णी

*** Corresponding Author**

कल्पना शर्मा

विभाग–हिन्दी

ज्योति विद्यापीठ महिला महाविद्यालय, जयपुर

Email: bhardwajkalpana330@gmail.com, Mo. 9783666659